BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION

an abode of Education

Kandri, Mandar, Ranchi

B.Ed.

Session – 2018-20

ASSIGNMENT

GUIDED BY :-

Asst. Prof./Lec.

Course 8 – Salma Khatoon

Course 9 – Rakesh Kumar Rai

Course 10 – Madhu Ranjan

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Submitted by –
Name – Rashmi Kumari
Roll no – 05
Session – 2018 – 2020

प्रमाण – पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि **रश्मि कुमारी, क्रमांक – 05 बी0एड0** की प्रशिक्षु ने "Assignment" में " Course-8,9,10 " को महाविद्यालय के सभी प्रभारी व्याख्यातागणों के देख–रेख में परियोजना कार्य के रूप मे सफलतापूर्वक सम्पन्न किया।

इस अवधि में इनका कार्य सहयोगात्मक एवं सराहनीय रहा। मैं इनकी उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

प्रशिक्षु का नाम – रश्मि कुमारी

कक्षा – बी0एड0 (द्वितीय वर्ष)

क्रमांक – 05

सत्र – 2018-2020

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

व्याख्याता का नाम

सलमा खातुन

राकेश कुमार राय

मधु रंजन

आभार ज्ञापन

शिक्षा मुख्य रूप से द्विपक्षीय प्रक्रिया है। जिसमें सीखना और सीखाना महत्वपूर्ण है। बी0 एड0 कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक स्तर पर निर्देशन, परामर्श आदि क्षेत्रो का महत्वपूर्ण स्थान है।

बी0 एड0 कार्यक्रम को पूर्ण करने में Course-8,9,10 से संबंधित सक्रिय कार्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष है इसमें Assignment को समझने में तथा उनके अनुसार शैक्षणिक कार्य को करने में सहायता मिलती है।

मैं अपने इस सक्रिय कार्य के लिए सर्वप्रथम हमारे प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रभारी राकेश कुमार राय का हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। जिसके द्वारा मुझे इस सक्रिय कार्य को करने की अनुमति प्रदान किये।

इस कार्य के मार्गदर्शन के लिए मैं हमारे सभी व्याख्यातागणों का आभार प्रकट करती हूँ, जिनके दिशा निर्देशन से मैने यह सक्रिय कार्य को पूर्ण किया।

इस कार्य में सहायता हेतु मैं अपनी पुस्तकालय अध्यक्ष प्रतिमा जयसवाल का भी धन्यवाद करना चाहती हूँ। जिन्होंने मुझे इस सक्रिय कार्य से संबंधित पुस्तके उपलब्ध कराने में मदद की।

धन्यवाद।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ सं.	अभियुक्ति
1.	पाठ्यक्रम को परिभाषित कीजिए पाठ्यक्रम निर्माण के मूलभुत सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए।	1 – 20	
2.	शैक्षिक उद्देश्य से आप क्या समझते हैं? ब्लूम की टैक्सनॉमी के अनुसार शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण को विस्तारपूर्वक स्पष्ट कीजिए।	21–37	
3.	समावेशी शिक्षा की अवधारणा को स्पष्ट करें। समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों एवं आवश्यकताओं का विस्तृत वर्णन करें।	38–52	

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION

an abode of Education

Kandri, Mandar, Ranchi

B.Ed.

Session – 2018-20

ASSIGNMENT

COURSE - 8

Topic - पाठयक्रम को परिभाषित कीजिए ? पाठयक्रम निर्माण के मूलभूत सिद्धांतों का वर्णन कीजिए ?

Guided by –
Prof./Lect :-
Salma Khatoon

Submitted by –
Name – Rashmi Kumari
Roll no – 05
Session – 2018 – 2020

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

पाठ्यक्रम को परिभाषित कीजिए।
पाठ्यक्रम निर्माण के मूलभूत सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए।

पाठ्यक्रम तथा पाठ्यक्रम निर्माण के मूलभूत सिद्धान्तों का वर्णन —

पाठ्यक्रम शिक्षा की सम्पूर्ण अवधारणा है। इसमें ज्ञान के सभी पहलु को एक क्रमानुसार ढंग से रखा जाता है। तथा इसी का अनुसरण शिक्षक शिक्षा देने के क्रम में तथा शिक्षार्थी ज्ञान प्राप्त करने के क्रम में अध्ययन करते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम को बनाया जाता है। पाठ्यक्रम तैयार करने से पूर्व बहुत सी बारिक चीजों का भी अध्ययन किया जाता है ताकि विषयों का पूर्ण ज्ञान पाठ्यक्रम में समाहित किया जा सके। अतः पाठ्यक्रम निर्माण में कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम को तैयार किया जाता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

पाठ्यक्रम (Curriculum)

शाब्दिक तौर पर curriculum शब्द लैटिन शब्द CURRUS तथा Currere से बना है। जिसका अर्थ क्रमशः दौड़ना तथा घुड़दौड़ का मैदान होता है।

इस आधार पर हम कह सकते है कि पाठ्यक्रम पाठ्य पुस्तक की विषय-वस्तु का सुव्यवस्थित समन्वित करता है जिसके निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षकों के माध्यम से हम निरंतर उसके पीछे दौड़ते रहते हैं। curriculum शब्द किसी भी विद्यालय में होने वाले सम्पूर्ण गतिविधियों को इंगित करता है। यह कह सकते हैं curriculum या पाठ्यक्रम के द्वारा शिक्षा व जीवन के उद्देश्यों की प्राप्ती की जा सकती है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में पाठ्यक्रम बच्चों को शिक्षा के उद्देश्यों के प्राप्ती के योग्य बनाता है। वास्तव में शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है जिसके तीन अंग है। शिक्षा एक, बालक तथा पाठ्यक्रम।

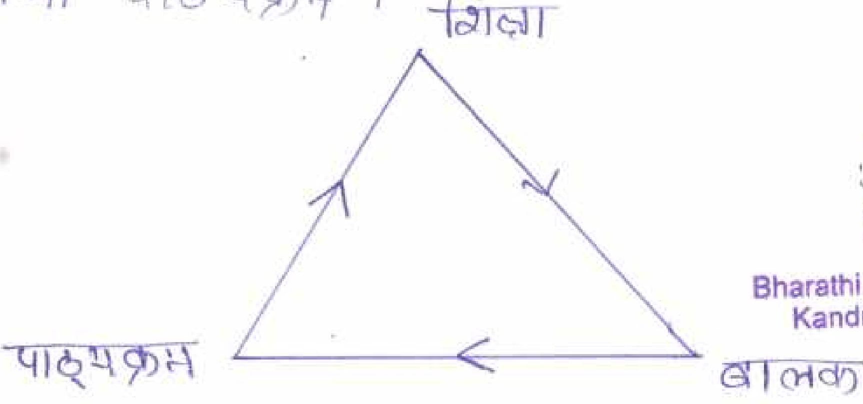

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

इन तीनों अंगों को पाठ्यक्रम या Curriculum संम्बोधित करता है अर्थात पाठ्यक्रम में इन तीनों का ही महत्वपूर्ण स्थान होता है।
पाठ्यक्रम औपचारिक शिक्षा की मूलभुत प्रक्रिया है। पाठ्यक्रम औपचारिक शिक्षा की रीढ़ है।

पाठ्यक्रम की परिभाषा

हेनरी के अनुसार – "पाठ्यक्रम वह साधन है जिसके द्वारा हम बालकों को शिक्षा के मूलभुत उद्देश्यों की प्राप्ती के योग्य बनाने की आशा करते हैं।"

* वॉल्टर के अनुसार – पाठ्यक्रम को किसी विद्यार्थी द्वारा लिए जाने वाले विषयों के रूप में परिभाषित नहीं किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम की कार्यत्मक संकल्पन के अनुसार इसके अंतर्गत वह सब अनुभव आ जाते हैं। जो विद्यालय में शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ती के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं।

* हलंडरस के अनुसार – पाठ्यक्रम को क्रिया एवं अनुभव के परिणाम के रूप में समझा जाना चाहिए।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

न कि अर्जित किए जाने वाले ज्ञान और संकलित किये जाने वाले तथ्यों के रूप में वास्तव में विद्यालय जीवन के अंतर्गत विविध प्रकार के कलात्मक शारीरिक एवं बौद्धिक अनुभव सम्मिलित रहते हैं।"

हमने विभिन्न विद्वानों के अनुसार दिए गये परिभाषाओं की चर्चा की है और पाठ्यक्रम को समझने का प्रयास किया है इन परिभाषाओं से हम पाठ्यक्रम के विषय में निम्न बातें जान पाये हैं।

(i) पाठ्यक्रम विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले विषयों के चुनाव से सम्बधित है किन्तु इसका अर्थ इससे व्यापक है।

(ii) पाठ्यक्रम में शिक्षा तथा जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति मुख्य आधार होती है।

(iii) पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय में सम्पन्न होने वाले सभी प्रकार के क्रियाकलाप तथा उनसे प्राप्त अनुभव सम्मिलित होते हैं।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

पाठ्यक्रम की संकल्पना — शाब्दिक तौर पर Curriculum शब्द लैटिन शब्द तौर पर तथा Currere से बना है जिसका अर्थ क्रमश: दौड़ना तथा घुड़दौड़ का मैदान होता है।

पाठ्यक्रम के संबंध में मुख्यत: दो प्रकार की अवधारणाएँ हैं।

(i) प्राचीन अवधारण

(ii) आधुनिक अवधारण

(i) पाठ्यक्रम की प्राचिन अवधारण —

प्राचीन काल में विद्यार्थियों की सीमित आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विषय वस्तु का वह क्रमबंध स्वरूप जो उनकी तत्कालिन आवश्यकताओं को ही ध्यान में रखकर बनाया जाता था जिसका अनुपालन शिक्षक तथा विद्यार्थी के लिए ही लाभप्रद होता था।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(ii) पाठ्यक्रम की नवीन अवधारणा –

आधुनिक अवधारणा के अनुसार पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की बदलती हुई आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विषय-वस्तु को क्रमबंध रूप में प्रस्तुत करती है जो उनकी निरंतर बदल रही आवश्यकताओं तथा रुचियों को ध्यान में रखकर बनाया जाता है, ऐसे पाठ्यक्रम से उन्हें अपने-अपने आयु तथा अनुभवों की सम्पूर्णता प्राप्त होती है जिस कारण उनका व्यक्तित्व का संतुलित विकास संभव हो पायेगा।

विद्यालयों में संचालित होने वाले पाठ्यक्रम गतिविधियों के साथ-साथ अतिरिक्त पाठ्यक्रम गतिविधियों, दिशानिर्देश तथा अंतर्व्यक्तिक संबंधों का समन्वित रूप है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांत

(i) विद्यार्थी केन्द्रीयता का सिद्धांत
(ii) विविधता का सिद्धांत
(iii) अनुभव की समग्रता का सिद्धांत
(iv) निरंतरता का सिद्धांत
(v) समन्वय का सिद्धांत
(vi) लचीलेपन का सिद्धांत
(vii) उपयोगिता का सिद्धांत
(viii) मानवीय मूल्यों के विकास का सिद्धांत
(ix) समुदाय के केन्द्रयता का सिद्धांत
(x) क्रिया केन्द्रयता का सिद्धांत
(xi) एकीकरण / सहसंबंध का सिद्धांत
(xii) सुरक्षा का सिद्धांत
(xiii) लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास का सिद्धांत
(xiv) रचनात्मक प्रशिक्षण का सिद्धांत
(xv) सार्थकता का सिद्धांत
(xvi) बुनियादी ज्ञान एवं कौशलों का सिद्धांत
(xvii) संरक्षण का सिद्धांत

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शिक्षण प्रक्रिया में पाठ्यक्रम के अति महत्वपूर्ण स्थान को देखते हुए पाठ्यक्रम के ढाँचे के निर्माण या विकास के सिद्धांत को एक महत्वपूर्ण क्रिया माना गया है जिसके माध्यम से न सिर्फ पाठ्यक्रम की रुपरेखा बनाई जाती है बल्कि साथ ही इसके पूर्ण रूपरेखा बनाने के उद्देश्य एवं सिद्धांतों को भी पूरा किया जाता है। विद्यालय में शिक्षण विषयों के लिए पाठ्यक्रम बनाने के उद्देश्यों से निम्नलिखित विशेष सिद्धांतों को सामान्यतः आधार के तौर पर अपनाया जाता है।

(i) विद्यार्थी केन्द्रीयता का सिद्धांत — वर्तमान में विद्यार्थियों को केन्द्र बिन्दु मानकर उनकी आवश्यकताओं, रुचियों, मानसिक स्तर, व्यक्तिगत योग्यताओं, वृत्तियों इत्यादि को ध्यान में रखते हुए उनके लिए पाठ्यक्रम का प्रारूप तैयार किया जाना चाहिए ऐसा करने से पाठ्यक्रम उपयोगी साबित होता है साथ ही उसकी सार्थकता से प्राप्त होने वाले उचित अनुभवों से हमारा आवश्यक विकास भी संभव हो पाता है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(ii) विविधता का सिद्धांत — संकिर्ण पाठ्यक्रम से सभी प्रकार की योग्यताओं का विकास संभव नहीं हो पाता है। समयानुकुल बदलती इसलिए व्यक्तिगत विभिन्नताओं, मानसिक स्तर आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए। पाठ्यक्रम का आधार व्यापक होना चाहिए। इस व्यापकता में विविधता का समावेश आवश्यक है। इस तरह पाठ्यक्रम प्रारूप निर्माण में विविधता के सिद्धांत का भी अनिवार्य रूप से पालन किया जाना चाहिए।

(iii) अनुभव के समग्रता का सिद्धान्त —

पाठ्यक्रम शैक्षिक क्रियाओं के साथ-साथ सह शैक्षिक एवं अतिरिक्त शैक्षिक क्रियाकलापों का भी सम्मिलित रूप होता है। इसलिए इसमें संबंधित विषय के विषय वस्तुओं के साथ-साथ अनऔपचारिक एवं औपचारिक श्रेणी में आने वाली क्रियाकलापों (पुस्तकालय, प्रयोगशाला, सेमीनार इत्यादि) को भी अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए। ताकि इनके माध्यम से प्राप्त

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

होने वाले विभिन्न प्रकार के अनुभवों को समग्रता के साथ पाठ्यक्रम के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सके।

(iv) निरंतरता का सिद्धांत — किसी भी कक्षा के लिए पाठ्यक्रम का प्रारूप बनाते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए कि वह पूर्ण कक्षा में पढ़ी हुई विषय से संबंधित हो बल्कि उसको व्यापकता प्रदान करते हुए आगे की उच्च कक्षा में पढ़ाये जाने वाली विषय वस्तु के लिए आधार का भी कार्य करे। इसलिए सभी कक्षाओं में भूत काल में प्राप्त की जा चुकी अनुभव वर्तमान समय में प्राप्त किए जा रहे अनुभवों तथा भविष्यकाल में प्राप्त करने योग्य अनुभवों में सह-संबंध स्थापित करके उनमें निरंतर कायम रखी जा सके।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(v) समन्वय का सिद्धान्त — पाठ्यक्रम का प्रारूप तैयार करते समय इस बात पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि इसमें औपचारिक, अनौपचारिक, सामान्य, विशिष्ट, उदार, व्यवहारिक, व्यवसायिक, प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष शिक्षाओं के साथ भी वैसी शिक्षा को भी ध्यान दिया जाए जिनसे हमारी व्यक्तिगत सामाजिक एवं राष्ट्रीय उद्देश्यों की भी पूर्ति होती है इस तरह से समन्वय स्थापित करके पाठ्यक्रम का प्रारूप बनाने से हमारे व्यक्तित्व के सभी पहलूओं पर सकारात्मक विकास हो पाता है।

(vi) लचीलेपन का सिद्धान्त — हमारी आवश्यकताएँ भी बदलती परिस्थितियों के अनुसार निरंतर बदलती रहती है इसलिए ऐसी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा मनोविज्ञान के नवीनतम विकास को दर्शाते हुए पाठ्यक्रम से लचिलेपन की अपेक्षा की जाती है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

ताकि उसमें समयानुसार आवश्यक परिवर्तन करते हुए उसके आधार पर वांछित परिणाम को प्राप्त किया जा सके।

(vii) उपयोगिता का सिद्धांत — पाठ्यक्रम का प्रारूप इस बात को ध्यान में रखकर बनाया जाना चाहिए की उसके प्राक्रमों में वैसी विषय वस्तु को शामिल किया जाना चाहिए जिनका हम भविष्य में सही तरिके से उपयोग कर समाज में अपनी-अपनी व्यक्तिगत सार्थकता को साबित कर सके। इस प्रकार उपयोगिता का सिद्धांत भी पाठ्यक्रम प्रारूप के निर्माण में सहायक है।

(viii) मानवीय मुल्यों के विकास का सिद्धांत — पाठ्यक्रम का प्रारूप इस तरह से बनाया जाना चाहिए जिससे वर्तमान भौतिक युग में भी विभिन्न मानवीय मुल्यों को बचाया जा सके साथ ही उन्हें बढ़ावा

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

भी दिया जा सके। इस उद्देश्य की शैक्षिक क्रियाकलाप मददगार साबित होती है। इस प्रकार पाठ्यक्रम का स्वरूप बनाने में मानवीय मूल्यों के विकास का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

(IX) समुदाय केन्द्रीयता का सिद्धांत

पाठ्यक्रम का प्रारूप तैयार करने में समुदाय की आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों को भी ध्यान में रखा जाता है इसके लिए सामाजिक प्रथाओं, मूल्यों, विश्वासों एवं मान्यताओं को पाठ्यक्रम में ध्यान देना चाहिए। इस प्रकार पाठ्यक्रम में सामुदायिक जीवन की महत्वपूर्ण विशेषताओं को दर्शाया जाता है ताकि वातावरण से अनुकूलता रखी जा सके।

(X) क्रिया – केन्द्रीयता का सिद्धांत – वर्तमान युग में काम करके सीखने के सिद्धांत को प्रमुखता

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

देता है इसलिए पाठ्यक्रम में खेल-क्रियाओं प्रयोजना क्रियाओं के साथ ही अन्य रचनात्मक क्रियाओं को भी स्थान दिया जाना चाहिए। क्योंकि ऐसी क्रियाओं में विद्यार्थियों की ज्यादा रुचि होती है इस प्रकार का पाठ्यक्रम न सिर्फ सृजनात्मकता का विकास करता है बल्कि साथ ही इससे प्राप्त होने वाला ज्ञान ज्यादा स्पष्ट एवं स्थाई होता है।

(XI) एकिकरण / सह-संबंध का सिद्धांत —

— पाठ्यक्रम का प्रारूप बनाते समय इस बात को भी ध्यान में रखना आवश्यक होता है कि शिक्षकों एवं विद्यार्थीयों की क्रियाओं में एकिकरण हो, पाठ्यक्रम में शामिल सभी विषयों तथा क्रियाओं में परस्पर संबंध हो, किसी भी विषय के विभिन्न प्रकरणों या इकाईयों में आपसी सम्बधों हो, ताकि ऐसे पाठ्यक्रम के माध्यम से हमारा भौतिक एवं सामाजिक वातावरण से इसको सह: सबंधित किया जा सके।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

इस प्रकार पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांत के आधार पर बनने वाला पाठ्यक्रम हमें सुसंबंधित तरिके से विभिन्न प्रकार के अनुभवों को प्रदान करने का माध्यम साबित हो पाता है।

(XII) सुरक्षा का सिद्धांत —

हमारी प्राचिन सभ्यता एवं सांस्कृतियों को पीढ़ी दर पीढ़ी पाठ्यक्रम के माध्यम से हस्तांतरित किया जाता है इसलिए पाठ्यक्रम में ऐसे प्रक्रमों एवं क्रियाओं को सम्मिलित करना आवश्यक हो जाता है जिनसे सभ्यता एवं सांस्कृति की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

(XIII) लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास का सिद्धांत — विशेषकर लोकतांत्रिक देशों में सभी स्तर के पाठ्यक्रमों का प्रारूप बनाते समय इस बात पर ध्यान दिया जाने लगा है कि पाठ्यक्रम से

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

सिर्फ संबंधित विषय वस्तुओं की ही जानकारी प्राप्त न हो बल्कि हम सभी में विभिन्न लोकतांत्रिक मूल्यों का भी विकास हो पाए।

(xiv) रचनात्मक प्रशिक्षण का सिद्धांत

— इस सिद्धांत के अनुसार पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो हमारी रचनात्मक योग्यताओं को प्रोत्साहित कर सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पाठ्यक्रम में विभिन्न रचनात्मक विषय वस्तुओं को स्थान देना आवश्यक होता है इसलिए पाठ्यक्रम का प्रारूप रचनात्मक प्रशिक्षण के सिद्धांत पर भी आधारित होता है।

(xv) सार्थकता का सिद्धांत —

इस सिद्धांत के अनुसार पाठ्यक्रम प्रारूप बनाते समय अधिगम कर्ताओं की आवश्यकताओं सहित उनके अन्य पहलुओं को भी ध्यान में रखते हुए अनुभवों के चयन एवं

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

उनकी आयोजन में उनकी सार्थकता को विशेष महत्व दिया जाता है। इस तरह सार्थकता का सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि भूत काल, वर्तमानकाल, एवं भविष्यकाल को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम की विषय वस्तु का चयन किया जाए।

(xvi) बुनियादी ज्ञान एवं कौशलों का सिद्धांत — पाठ्यक्रम प्रारूप निर्माण के इस सिद्धांत के अनुसार इस बात का ध्यान रखना आवश्यक होता है कि पाठ्यक्रम के माध्यम से प्रारंभिक एवं बुनियादी ज्ञान एवं कौशलों का विकास हो पाए क्योंकि बड़ी संख्या में विद्यार्थियों की पढ़ाई प्रारंभिक स्तर पर ही शुरू होकर उसी स्तर पर समाप्त भी हो जाती है उनकी आत्मनिर्भरता के लिए बुनियादी ज्ञान एवं कौशलों के महत्व को देखते हुए उनके पाठ्यक्रम में संबंधित विषय वस्तु, क्रियाओं एवं उन अनुभवों को

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शामिल करना आवश्यक होता है ताकि संप्रेषण कौशलों, मनोशारीरिक योग्यताओं का विकास करते हुए बुनियादी ज्ञान एवं कौशलों को प्राप्त करने का सांस्कृतिक माध्यम पाठ्यक्रम को बनाया जा सके।

(XVII) विकास की सतत प्रक्रिया का सिद्धांत —

— प्रत्येक देश की शिक्षा उस देश के दर्शन समाज वैज्ञानिक औद्योगिक, राजनैतिक स्थिति इत्यादि परिवर्तनशील होने की वजह से आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम के प्रारूप में परिवर्तन करने पड़ते हैं। इस प्रकार पाठ्यक्रम के प्रारूप के निर्माण में विकास की सतत प्रक्रिया का सिद्धांत की भी आवश्यकता नजर आती है।

(XVIII) अग्रदर्शिता का सिद्धांत —

पाठ्यक्रम हमें वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी तैयार करता है। अतः पाठ्यक्रम प्रारूप बनाते समय भविष्य में होने वाले परिवर्तनों

Attested
Principal
Bharati College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

का अनुमान लगाकर उसी अनुसार आवश्यक विषयों एवं क्रियाओं को शामिल करना चाहिए। ऐसा करने से पाठ्यक्रम भविष्य में आने वाली समस्याओं एवं परिस्थितियों को समझने एवं उनका समाधान करने में हमारी मदद करता है इस तरह अग्रदर्शीता के सिद्धांत का पालन प्रारूप बनाते समय करने से ऐसा पाठ्यक्रम भावी जीवन के अनुकूल हो जाता है।

(xix) संरक्षण का सिद्धांत —

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

निष्कर्ष — उपरोक्त अध्ययन से हमें यह ज्ञात होता है कि शिक्षा ग्रहण करने की प्रक्रिया काफी जटिल है। इसलिए इसे सरल तथा ज्ञानवर्धक बनाने के लिए पाठ्यक्रम का सहारा लिया जाता है। जिससे शिक्षा के संपूर्ण पहलुओं को ज्ञात किया जा सके। तथा इसी को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम निर्माण में सिद्धांतों को ध्यान में रखा जाता है ताकि शिक्षा को पूर्णतः दिया जा सके।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION

an abode of Education

Kandri, Mandar, Ranchi

B.Ed.

Session – 2018-20

ASSIGNMENT

COURSE - 9

Topic – शैक्षिक उद्देश्य से आप क्या समझते हैं ? ब्लूम की टैक्सोनामी के अनुसार शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण को विस्तार पूर्वक स्पष्ट कीजिए ?

Guided by –
Prof./Lect :-
Rakesh Kumar Rai

Submitted by –
Name – Rashmi Kumari
Roll no – 05
Session – 2018 – 2020

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

१) शैक्षिक उद्देश्य से आप क्या समझते है? ब्लूम की टैक्सनॉमी के अनुसार शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण को विस्तार पूर्वक स्पष्ट कीजिए।

उत्तर ⟹ शैक्षिक उद्देश्य से आशय तथा ब्लूम की टेक्सनॉमी के अनुसार शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण —

शैक्षिक उद्देश्य के माध्यम से यह स्पष्ट किया जाता है कि किस तरह शिक्षार्थी को शिक्षकों द्वारा अध्ययन कराया जाए जिससे उन्हें अधिकतम ज्ञान की प्राप्ती हो सके। इसी को ध्यान में रखते हुए ब्लूम ने अपनी एक अध्ययन को इस विषय में स्पष्ट किया है। उन्होंने शैक्षिक उद्देश्य को क्रमबद्ध रूप से अपने अध्ययन में प्रस्तुत किया है। जिसे "ब्लूम की टैक्सनॉमी" कहा जाता

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शैक्षिक उद्देश्य

शैक्षिक उद्देश्यों का तात्पर्य उन उपायों के स्पष्ट निर्धारण से होता है जिनके माध्यम से शैक्षिक प्रक्रिया द्वारा विद्यार्थियों में व्यवहार परिवर्तन लाए जाने की संभावना रहती है।

दूसरे शब्दों में शैक्षिक उद्देश्य का तात्पर्य कक्षा / वर्ग शिक्षण या अनुदेशन द्वारा छात्रों के व्यवहार परिवर्तन से होता है। अभिक्रमित अनुदेशन तथा कक्षा शिक्षण में शैक्षिक तथा शैक्षिक उद्देश्य का छात्रों के साथ सीधा संबंध छात्रों के अधिगम अथवा व्यवहार परिवर्तन से होता है।

शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण के उद्देश्यों को तथा शैक्षिक उद्देश्यों में कुछ न कुछ अन्तर है, जो किसी परिवर्तन को तालिका के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शैक्षिक उद्देश्य की परिभाषा

शैक्षिक उद्देश्य की परिभाषा मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई हैं जो इस प्रकार है-

डॉसटन के अनुसार — "व्यावहारिक रूप से शैक्षिक उद्देश्य वह योग्यता या कौशल है जिसे छात्रों द्वारा सन्तोषजनक शिक्षण - अधिगम स्थितियों में ग्रहण तथा विकसित किया गया हो।"

ब्लूम के अनुसार — "शैक्षिक उद्देश्यों की सहायता से केवल पाठ्यक्रम की रचना और अनुदेशन के लिये निर्देशन ही नहीं दिया जाता अपितु ये मूल्यांकन की प्रविधियों के विशिष्टीकरण में भी सहायक होते हैं।"

इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि "शिक्षा उद्देश्य वे लक्ष्य हैं

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

जिनकी सहायता से केवल पाठ्यक्रम की रचना ही नहीं की जाती तथा अनुदेशक के लिए निर्देशन ही नहीं दिया जाता है, बल्कि इनसे पहले ही मूल्यांकन उपागम के प्रवृधियों की रचना तथा प्रयोग किया जाता है।"

शैक्षिक प्रणाली का लक्ष्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है। कक्षा अध्यापक के लिए व्यावहारिक रूप में इन लक्ष्यों की पूर्ण प्राप्ति लगभग असम्भव सी है यदि वह इन लक्ष्यों का विश्लेषण नहीं कर लेता। अध्यापक के लिये यह जानना आवश्यक है कि उद्देश्यों से क्या विशेषताऐं होती हैं, वह कितनी प्रकार की है? इन सभी प्रश्नों का उत्तर शैक्षिक उद्देश्य के अध्ययन से प्राप्त होता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शैक्षिक उद्देश्य की विशेषताएँ

* शैक्षिक उद्देश्य की तीन विशेषताऐं होती हैं।

1.) किसी अन्तिम लक्ष्य के लिये की जाने वाली क्रिया को यह दिशा प्रदान करते हैं।

2) किसी क्रिया द्वारा नियोजित परिवर्तन लाया जाता है।

3) इनकी सहायता से क्रियाओं की व्यवस्था की जाती है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शैक्षिक उद्देश्य अधिक व्यापक होते हैं यह पूर्णता की उस स्थिति का बोध कराते हैं जिस तक पहुँचना संभव भी हो सकता है और असम्भव भी।

इसके विपरीत शिक्षण या अधिगम उद्देश्य संकुचित व विशिष्ट होते हैं। ये पूर्व निर्धारित होते हैं और इनका निर्माण इस प्रकार किया जाता है कि निश्चित अवधि वाले एक निर्धारित कालांश में सामान्य कक्षा शिक्षण सम्पन्न करते समय आसानी से प्राप्त किये जा सकें। इसलिए इसे अनुदेशनात्मक उद्देश्य भी कहा जाता सकता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

ब्लूम के टैक्सोनामी के अनुसार शैक्षिक उद्देश्य का वर्गीकरण

ब्लूम ने शिक्षण पद्धति में अपने मूल्यांकन उपागम के माध्यम से क्रांति उत्पन्न कर दी है। उसने शिक्षण तथा मूल्यांकन को उद्देश्य आधारित बनाने का सफल प्रयास किया है। उसने बताया है कि शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है, जिसमें शैक्षिक प्राप्त उद्देश्य अधिगम अनुभव तथा आपेक्षित व्यवहार परिवर्तन सम्मिलित है।

टेक्सोनामी शब्द से हमारा आशय ऐसी प्रणाली से है जिसमें वर्गीकरण किया जाता है। वैसे तो कई शिक्षा विदों एवं विद्वानों के द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों के वर्गीकरण का प्रयास किया गया है लेकिन जो सबसे अधिक प्रचलन में है वह है B.S. Bloom's एवं उनके सहयोगी का वर्गीकरण।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri Mandar, Ranchi

1949 में अमेरिका के कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों के प्रविक्षकों ने एक टेक्सनोमी गुरू को संगठित किया है। तथा इस पर संगोष्ठियाँ आयोजित की गई। इसके बाद शैक्षिक उद्देश्यों का एक विस्तृत वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया जिसे शैक्षिक उद्देश्यों के वर्गीकरण के नाम से जाना जाता है। उन्होनें उद्देश्यों को व्यवहार के आधार पर निर्मित करके इनकी उपयोगिता पर बल दिया गया।

इस टेक्सनोमी के कई उद्देश्यों है। ब्लूम के शैक्षिक उद्देश्यों को हम तीन भागों में विभाजित कर सकते है। सीखने का उद्देश्य मुख्य रूप से छात्रों के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों से है ये व्यवहार परिवर्तन तीन प्रकार के होते है। इसे इन तीन प्रकार द्वारा स्पष्ट रूप से आख्या को स्पष्ट किया गया है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

ब्लूम टेक्सोनामी

ज्ञानात्मक

- ज्ञान
- बोध
- प्रयोग
- विश्लेषण
- संश्लेषण
- मुल्यांकन

भावात्मक

- ग्रहण
- अनुक्रिया
- आँकलन
- संगठन
- मुल्य का विशेषिकरण

क्रियात्मक

- प्रत्यक्षीकरण
- तत्परता
- निर्देशित अनुक्रिया
- यांत्रिकता
- जटिल प्रत्यक्ष अनुक्रिया
- आदतों का निर्माण

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

ज्ञानात्मक पक्ष के शैक्षिक उद्देश्य

ज्ञानात्मक पक्ष का विकास प्रो• ब्लूम ने 1956 में किया था, जिनका संबंध प्रमुख रूप से सूचनाओं, ज्ञान, तथ्यों का ज्ञान विषय वस्तु के विश्लेषण, संश्लेषण एवं मूल्यांकन आदि बौद्धिक क्रियाओं से होता है। ये बौद्धिक क्रियाएँ बालक को अधिगम अनुभव प्रदान कर उनके व्यवहार में परिवर्तन लाती है।

(i) ज्ञान — इसके अंतर्गत हम विशिष्टताओं का ज्ञान विशिष्ट तथ्यों का ज्ञान परंम्पराओं का ज्ञान, शब्दावली का ज्ञान, प्रचलन तथा तारतम्यता (continuity) तथा सिद्धांतों एवं संरचनाओं आदि को लेते है।

(ii) बोध — इसके अंतर्गत हम अनुवाद अर्थ इत्यादि को लेते है।

(iii) प्रयोग — वास्तविक परिस्थितियों में तथ्यों एवं सामान्यकरण का प्रयोग करना। (Gendrillization)

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(iv) विश्लेषण — इसके अंतर्गत तथ्यों का विश्लेषण एवं सिद्धांतों का विश्लेषण किया जाता है।

(v) संश्लेषण — संश्लेषण के तहत तथ्यों को नयी संरचना में संगठित किया जा रहा है।

(vi) मूल्यांकन — मूल्यांकन के तहत सामग्री विशेष का मूल्य निर्धारण करते हैं। इसमें आंतरिक एवं बाह्य प्रमाण के संदर्भ में निर्णय लिया जाता है।

भावात्मक

भावात्मक पक्ष का विकास ब्लूम ने 1964 ई॰ में किया था। भावात्मक उद्देश्य का संबंध क्षमताओं, दक्षताओं, रुचियों संवेग तथा मनोवृत्तियों का मूल्यांकन से होता है। प्रोफेसर ब्लूम ने छात्रों का भावात्मक विकास करने के लिए प्राप्त उद्देश्यों को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया है —

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(I) ग्रहण — यहाँ ग्रहण का आशय विद्यार्थियों के द्वारा सीखने की इच्छा होना इसका सीधा संबंध विद्यार्थियों की संवेदना से होता है जो किसी क्रिया या उद्दिपन से उत्पन्न होता है। इसके द्वारा कई रूचियों अभिवृत्तियों एवं मुल्यों का विकास होता है।

(II) अनुक्रिया — इस प्रक्रिया में व्यक्ति एक विशेष प्रकार की अनुक्रिया व्यक्त करता है सक्रिया ढंग से अपनी रूचि दिखाता है। जैसे - आज्ञा पालन करना, उत्तर देना, पढ़ना लिखना, विचार-विमर्श करना, रिकॉड करना इत्यादि।

(III) आँकलन — आँकलन ग्रहण एवं अनुक्रिया पर निर्भर करता है।

आँकलन में किसी वस्तु क्रिया एवं व्यवहार का महत्व निहित होता है। इसमें विद्यार्थी में विभिन्न विचारों घटनाओं, वस्तुओं से किसी निश्चित मुल्यों को प्राप्त करने की आशा उत्पन्न होती है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(iv) संगठन — इसमें विद्यार्थी ग्रहण अनुक्रिया एवं आँकलन के पश्चात प्रत्येक मूल्य को एक क्रम प्रदान करता है। और ऐसी स्थितियों को प्रोत्साहित करता है। जिसमें एक से अधिक मूल्यों की आवश्यकता है।

(v) मूल्य का विशेषिकरण — यह भावात्मक क्षेत्र का सर्वोच्च उद्देश्य है इस स्तर तक पहुँचते-पहुँचते विद्यार्थी विभिन्न रुचियों अभिव्यक्तियों तथा मूल्यों का अनुभव कर चुका होता है इस स्तर पर उपरोक्त चारों स्तरों का समावेश हो जाता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

क्रियात्मक

क्रियात्मक पक्ष का विकास सिम्पसन ने 1962 में किया था। क्रियात्मक पक्ष का संबंध कौशल तथा शारीरिक क्रियाओं के विकास से होता है। इस क्षेत्र का सबसे कम विकास हुआ है, क्योंकि आज भी क्रियात्मक पक्ष के उद्देश्यों को व्यवहारिक रूप में नहीं लाया जाता है। इसलिए विभिन्न शिक्षाविदों ने इस क्षेत्र में रूचि न लेना कहा जा सकता है। इस उद्देश्य को भी निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया गया है —

(i) प्रत्यक्षीकरण — इसमें बालक पूरी परिस्थिति को समझते हुए शारीरिक गति वादित क्रिया की ओर बढ़ाता है इसमें इंद्रियों का क्रियाओं के साथ संबंध है।

(ii) तत्परता — इसमें विद्यार्थी प्रारंभिक सामंजस्य स्थापित करता है। अर्थात विशिष्ट क्रियाओं एवं अनुभवों के प्रारंभिक समायोजन को तत्परता कहते हैं।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Mandar, Ranchi

इसके तीन स्तर हैं —

तत्परता

- मानसिक स्तर
- शारीरिक स्तर
- भावात्मक स्तर

(iii) **निर्देशित अनुक्रिया** — इसके अंतर्गत व्यक्ति किसी के निर्देशन के फल स्वरूप बाहरी रूप से क्रिया उत्पन्न करता है। इसमें जटिल कुशलताओं से संबंधित योग्यताओं पर बल दिया जाता है।

(iv) **यांत्रिकता** — इसमें अनुकरण प्रक्रिया को अपनाते हुए व्यक्ति विश्वास-पूर्वक क्रिया उत्पन्न कर लेता है। इसमें व्यक्ति में आत्मविश्वास के साथ काम करने की क्षमता का विकास होता है।

(v) **जटिल प्रत्यक्ष अनुक्रिया** — इसमें व्यक्ति इस योग्य हो जाता है कि वह अपेक्षित गति के साथ क्रिया

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

उत्पन्न कर सकता है इसमें विद्यार्थी इतनी निपुन्ता या कार्य कुशलता प्राप्त कर लेता है कि वह अत्यंत जटिल कार्य को कम से कम समय में कम शक्ति के साथ कर सकता है।

(vi) आदतों का निर्माण – आदतों का निर्माण से आशय है कि विद्यार्थियों में अच्छी आदतों का निर्माण करना। जिससे वे अपने कर्तव्य पालन के योग्य बन सके। अपने अनुशासन का अनुसरण कर सके ।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

निष्कर्ष — इस अध्ययन से हमें ज्ञात होता है कि शिक्षा मनुष्य के लिए एक आवश्यक तत्व है अत: वह यदि सही ढंग से प्राप्त हो तो जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए शैक्षिक उद्देश्य हमें बताते हैं कि शिक्षण प्रक्रिया को विद्यार्थी तथा शिक्षकों को क्रमानुसार प्राप्त होना चाहिए।

इसी को ब्लूम ने अपने टेक्सनॉमी में बताया है। इन्होंने शैक्षिक उद्देश्य को तीन मुख्य भागों में बाँटकर उसके महत्वपूर्ण घटकों का वर्णन कर शैक्षिक उद्देश्यों को एक टेक्सनॉमी में प्रस्तुत किया है। जिसका प्रयोग आज शिक्षण प्रक्रिया में किया जाता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Q) समावेशी शिक्षा की अवधारणा को स्पष्ट करें। समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों एवं आवश्यकताओं का विस्तृत वर्णन करें।

उत्तर — समावेशी शिक्षा की अवधारणा तथा समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों एवं आवश्यकताओं का वर्णन —

समावेशी शिक्षा वह शिक्षा व्यवस्था है जिसके अंतर्गत सभी तरह के बच्चों को एक साथ एक ही परिवेश में शिक्षा अवगत कराना। यह शिक्षा व्यवस्था कुछ विशिष्ट बच्चे जो किन्ही कारणों से शिक्षण प्रक्रिया से वंचित रहते हैं। उन्हें उपयुक्त व्यवस्था के साथ शिक्षा प्रदान करना। यह उन सभी बच्चों बच्चो के जीने के अधिकारों की पूर्ति करता है जिसे किसी कारण बच्चों से छीन लिया जाता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

समावेशी शिक्षा

समावेशी शिक्षा वह शिक्षा होती है जिसमें प्रतिभाशाली बालक तथा सामान्य बालक एक साथ, सामान्य कक्षा में पूर्ण समय या अर्द्धकालीन समय में शिक्षा ग्रहण करते है जिसके अंतर्गत विशिष्ट क्षमता वाले बालक जैसे प्रतिभाशाली बालक, मंदबुद्धि बालक, बहरे बालक, अंधे बालक तथा विशिष्ट योग्यता वाले बालकों को एक साथ सामान्य बालक के साथ शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

समावेशी शिक्षा के द्वारा सर्वप्रथम छात्रों के बौद्धिक स्तर की जाँच की जाती है तत्पश्चात उन्हें दी जाने वाली शिक्षा का स्तर निर्धारित किया जाता है। और उनके शैक्षिक स्तर के अनुरूप सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा दी जाती है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

समावेशी शिक्षा की परिभाषाएँ –

समय - समय पर भिन्न - भिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा समावेशी शिक्षा की परिभाषाएँ दी गई है –

* स्टीफन तथा ब्लेकहर्ट के अनुसार –

"शिक्षा की मुख्य धारा का अर्थ बाधित बालकों की सामान्य कक्षाओं में शिक्षण व्यवस्था करना है यह समान अवसर मनोवैज्ञानिक सोच पर आधारित है जो व्यक्तिगत योजना के द्वारा सामाजिक मानकीकरण और अधिगम को बढ़ावा देती है।"

* अन्य शिक्षा शास्त्रियों के अनुसार –

"समावेशी शिक्षा को एक आधुनिक सोच की तरह परिभाषित किया जा सकता है जो कि शिक्षा को अपने में सीमटे हुए दृष्टिकोण से मुक्त करती है और उपर उठने के लिए प्रोत्साहित करती है।"

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

समावेशी शिक्षा की अवधारणा

प्राचिन काल में जिस किसी भी परिवार में विशिष्ट बच्चों का या दिमांग बच्चों का जन्म होता था तो उस परिवार के लोग उन्हें जन्म लेने के बाद जान से मार देते थे। तथा समाज उन्हें कलंक की दृष्टि से देखता था। इस विचार धारा को हम समयानुसार इस प्रकार समझ सकते हैं।

17 वीं — इस शताब्दी में लोगों का नजरिया इन विशेष बच्चों के लिए सही नहीं था उनका ये मानना था कि इस तरह के बच्चे समाज परिवार पर एक बोझ है अतः इन्हें जीने का कोई अधिकार नहीं है। जिन परिवारों में इस तरह के बच्चे का जन्म होता था उस परिवार में वो वैवाहिक रिस्ते करने से भी कतराते थे। इसलिए वैसे परिवार खुद से ही इन बच्चों की हत्या कर देते थे।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mander, Ranchi

18वीं शताब्दी — इस शताब्दी में वैज्ञानिक पद्धति के अध्ययन द्वारा इन बच्चों की समस्याओं का बेहतर तरीके से समझा गया, जिसके फलस्वरूप शारीरिक रूप से बाधित बालकों की शिक्षा के लिए शिक्षा पर गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा ध्यान दिया गया।

19वीं शताब्दी — बाल विकास संबंधी तथ्यों एवं आँकडों के संकलन हेतु विभिन्न पत्र एवं पत्रिकाओं का सम्पादन भी इस शताब्दी से प्रारंभ हुआ। बाल विकास अध्ययन के फलस्वरूप उन शिशुओं का भी पता चला जो मानसिक दुर्बलता, शारीरिक बाधित के कारण विद्यालय, परिवार, और समाज के लिए एक समस्या का रूप धारण कर चुके थे। 1891 ई. में सर्वप्रथम ऐसे बच्चों के उपचार हेतु मनोवैज्ञानिक केन्द्र की स्थापना हुई।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

२० वीं शताब्दी

२०वीं शताब्दी आधुनिक युग की शुरूआती दौर माना जाता है इस युग सभी चीजों को गहराई से देखा जाने लगा। इसी तरह समावेशी शिक्षा को भी बालकों की विभिन्न क्षमताओं का विशेष अध्ययन किया गया। इस युग में बच्चों को जानीजन उनके शारीरिक एवं भावनात्मक विकास, मानसिक विकास, भाषा, चारितिक बल, धार्मिक प्रवृत्ति नैतिकता खेल-कुद भाव प्रदर्शन की जिज्ञासा एवं विधि तथा उनकी सामाजिकता आदि को अध्ययन का विषय बनाया गया। इस शताब्दी में शिशु अध्ययन अनुमान पर आधारित न होकर प्रत्यक्ष अवलोकन और अनुभव पर किया जाने लगा। साथ ही सामाजिक कुरितियों के दमन के फलस्वरूप अस्पतालों और जच्चा बच्चा गृहों की सहायता से मनोवैज्ञानिकों दृष्टिकोण शिशुओं के अध्ययन में अत्यंत महत्वपुर्ण प्राप्त होने लगा।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

समावेशी शिक्षा के उद्देश्य

समावेशी शिक्षा के उद्देश्य से आशय है कि सामावेशी शिक्षा प्राप्त करने हेतु जो कार्यक्रम बनाए गए हैं जिसके लिए इन उद्देश्यों की पूर्ति होना अनिवार्य है जब इन उद्देश्य की पूर्ति होगी तभी संभव होगा कि समावेशी शिक्षा से सभी बच्चों को लाभ हो रहे हैं।

समावेशी शिक्षा के उद्देश्य की निम्नलिखित उद्देश्य है —

(1) शारीरिक दोष युक्त विभिन्न बालकों की विशेष आवश्यकताओं की सर्वप्रथम पहचान करना तथा उनका निर्धारण करना।

(11) शारीरिक दोष की दशा को बढ़ाने से पहले उनके रोकथाम के लिए सर्वप्रथम

Attested
Principal
Bharathi College of Education
...Mandar, Ranchi

उपाय करना।

(iii) बालकों के सीखने की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न नवीन विधियों द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करना।

(iv) शारीरिक रूप से विकृतियुक्त बालकों का पुर्णवास कराया जाना।

(v) शारीरिक रूप से विकृति युक्त बालकों की शिक्षण समस्याओं की जानकारी प्रदान करना।

(vi) शारीरिक रूप से विकृति युक्त बालकों की शिक्षण संबंधित जानकारी प्राप्त करने उनके सुधार हेतु शारीरिक या व्यक्तिगत रूप से या फिर संस्था द्वारा तैयारी किया जाना।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

समावेशी शिक्षा की आवश्कताएँ।

समावेशी शिक्षा दिव्यांग बालकों में हीन भावना को दूर करने का एक सार्थक प्रयास है। कुछ शिक्षाशास्त्रियों के अनुसार यह शिक्षा बेमानी है। उनके अनुसार यह शिक्षा के अवसरों में असमानता लाती है। वर्तमान समय में मनोवैज्ञानिकों ने यह विचार रखा और विशेष पहल की, कि दिव्यांग बच्चों (मानसिक रूप से) को सामान्य बच्चों के साथ अगर शिक्षा दी जाए तो उन्हें कुण्ठाग्रस्त होने से बचाया जा सकता है और सामान्य बच्चों की तरह उनमें सुधार, लक्ष्य प्राप्ती में सहायता प्रदान की जा सकती है। उनका मानना है कि समावेशी शिक्षा हमारे सामान्य विद्यालयों में दी जाए जिससे सभी बालकों को शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हो।

इसे समझना अति आवश्यक है इसलिए हम समावेशी शिक्षा की आवश्कताएँ को कुछ बिन्दुओं के रूप समझे तो इसके महत्व को पहचान कर पाने में आसानी होती है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kahdri, Mandar, Ranchi

समावेशी शिक्षा की आवश्यकताएँ

(i) सामान्य मानसिक विकास संभव है।

(ii) सामाजिक एकिकरण को सुनिश्चित करती है।

(iii) समावेशी शिक्षा के माध्यम से एकिकरण संभव है।

(iv) समावेशी शिक्षा कम खर्चिली है।

(v) शैक्षिक एकिकरण संभव है।

(vi) समानता के सिद्धांत का पालन करना।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(i) सामान्य मानसिक विकास संभव है —

विशिष्ट शिक्षा में मानसिक जटिल विशेष रूप से चिन्हीत होती है। दिव्यांग बालक अपने आप को दूसरे बालकों की अपेक्षा कमजोर तथा हीन समझते हैं। जिसके कारण इनकी प्रगति सामान्य रूप से नहीं हो पाती। समावेशी शिक्षा अवस्था में दिव्यांगों को सामान्य बालकों के साथ मानसिक रूप से आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया जाता है। इस शिक्षा में प्रत्येक बालक सोचता है कि वह किसी भी प्रकार से किसी अन्य दूसरे बालकों से अलग या कम नहीं है। इस प्रकार समावेशी शिक्षा पद्धति सामान्य मानसिक प्रगति को उचित अवसर प्रदान करती है।

(ii) सामाजिक एकिकरण को सुनिश्चित करती है। —

दिव्यांग बालक जब सामान्य बालकों के साथ शिक्षा पाते हैं तो इनमें सामाजिक गुण, नैतिक गुण, आपसी प्रेम सहयोग, सहानुभुति गुणों का विकास होता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

तथा उनमें शिक्षण तथा सामाजिक प्रतिस्पर्द्धा की भावना विकसीत होती है।

(iii) समावेशी शिक्षा के माध्यम से एकिकरण संभव है —

विशिष्ट शिक्षण व्यवस्था की अपेक्षा समावेशी शिक्षण व्यवस्था में समाजिकता का वातावरण उपलब्ध रहता है जिसमे दिव्यांग तथा सामान्य बालक में सामंजस्य स्थापित करना आसान होता है। तथा उनमें भावनात्मक समायोजन आदि की भावना का विकास संभव हो पाता है।

(iv) समावेशी शिक्षा कम खर्चिली है —

समावेशी शिक्षा कम खर्चीली होती है। क्योंकि इस शिक्षा व्यवस्था में सामान्य बच्चों के सामान्य तकनिक एवं सामान्य विधि से उन बच्चों को भी शिक्षा दी जाती है। इन बच्चों के लिए किसी भी तरह की कोई विशेष व्यवस्था नहीं की जाती है। जिससे खर्च अधिक नहीं होता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

जब विशिष्ट शिक्षा में विशिष्ट अध्यापक (प्रशिक्षित) विशेषज्ञ, चिकित्सक, विशेष तकनिक, विशेष प्रशिक्षण कार्य क्रम आदि की व्यवस्था की जाती है जिससे यह शिक्षा व्यवस्था समावेशी शिक्षा व्यवस्था की अपेक्षा अधिक मंहगी और खर्चीली हो जाती है।

(v) शैक्षिक एकिकरण संभव है —

शैक्षिक योग्यता सामान्यतः समावेशी शिक्षा उन्मुक्त वातावरण में ही संभव है। शिक्षाविदों का मानना है कि विशिष्ट शिक्षा संस्थान एक बालक के प्रवेश के पश्चात शैक्षिक योग्यता रखने वाले दिव्यांग बालक उनके गुणों को ग्रहण करते है। उन्हें यह मालूम है कि विशिष्ट विद्यालयों में छात्र तथा दिव्यांग छात्र शिक्षा को पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर पाते। (सामान्य विद्यालयों में बाधित छात्रों को प्रवेश दिलाने के कारण वह ठीक प्रकार से शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ होते है अतः

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Mandar, Ranchi

बालक आंशिक रूप से बाधित है तो उसे सामान्य बच्चों के साथ सामान्य शिक्षा देकर योग्य बनाया जा सकता है।

(vi) समानता के सिद्धांत का पालन करना। —

भारत में सामान्य शिक्षा तथा समावेशी शिक्षा के लिए और इसके व्यापक रूप से विस्तार के लिए संवैधानिक व्यवस्था की गई है। संविधान के अंतर्गत दिव्यांग बालकों के पुर्णवास के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराए गए है। समावेशी शिक्षा में वातावरण के माध्यम से समानता के उद्देश्य की भी प्राप्ती होती है क्योंकि समावेशी शिक्षा में विशिष्ट बालक को सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा देते है जिससे उनके मन में किसी भी तरह की हीन भावना नही आती है और वे अपने आप का सामान्य बच्चों की तरह समझते है जिससे उनका विकास अच्छी तरह से होता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

निष्कर्ष — इस अध्ययन से हमें ज्ञात होता है कि जीवन अनमोल होता है तथा हर किसी को पूरे सम्मान के साथ जीवन जीने का पूर्ण अधिकार प्राप्त होना चाहिए। इस जीवन में कमियाँ हर किसी के जीवन में होती है लेकिन उस कमी का उन्हें एहसास न कराकर उन्हें शिक्षा, जीवन की खुशियाँ आदि प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना चाहिए। मनुष्य में मानवता पाई जाती है उसी मानवता के ध्यान में रखते हुए बच्चों को शिक्षा के अवसर प्रदान करना चाहिए। तथा समाज में तथा शिक्षण प्रणाली में भी आवश्यकता अनुसार बदलाव लाना चाहिए।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi